20.1.25

DATE

PAGE 1

Tender Heart High School, Sec.33-B, C.H.D.

कक्षा- चौथी शिक्षिकाएँ - सुमन शर्मा, रोमा रानी
हिन्दी साहित्य (पाठ-14 'कूप-मंडूक') लेखक-स्वामी नाथ पांडेय

पुस्तक- नवतरंग-4 शेष भाग----

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा चौथी की पुस्तक नवतरंग-4 के पाठ-14 'कूप-मंडूक' को पढ़ेंगे। यह पिछले सप्ताह भेजे गए कार्य का शेष भाग है।

पिछले सप्ताह हमने पढ़ा था कि कुएँ में एक मेंढक अन्य जीवों के साथ बड़े आराम से रहता था। उसका स्वभाव शेखीला था। अतः उसने स्वयं को उन जीवों का राजा घोषित कर दिया। मेंढक ने बाहर की दुनिया नहीं देखी थी। वह कुएँ को ही अपनी दुनिया समझता था। अब हम पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं -

एक बार की बात है, कुएँ में "धप्प---- से ऊपर से कुछ चीज़ आकर गिरी। सबने देखा - एक कठोर खोल के अंदर एक नन्हा-सा जीव था। कुएँ के जीव उस बाहरी नन्हे जीव को देखकर डर गए। सब जीवों ने मिलकर यह खबर अपने राजा के पास पहुँचाई और उस जीव को पकड़कर राजा मेंढक के पास ले गए। राजा ने पूछा- "तुम कौन हो? यहाँ कैसे आ पहुँचे?" राजा की बात सुनकर कछुआ का बच्चा डर गया और बोला," मैं कछुए का बच्चा हूँ। मैं तालाब के किनारे बैठकर अपनी माँ का इंतज़ार कर था। अचानक एक चील ने मुझे चोंच में दबाया और उड़ चली। मैं छटपटा रहा था और अचानक इस कुएँ में गिर पड़ा।"

उस नन्हे जीव का वृत्तांत सुनकर राजा बने मेंढक को विश्वास नहीं हुआ।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - सुमन शर्मा, रोमा रानी
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-14 'कूप-मंडूक) लेखक - स्वामीनाथ पांडेय

राजा बोला, "कैसा तालाब ? कैसी चील ? यहाँ तो कुछ भी नहीं है। मैंने संपूर्ण कुएँ का भ्रमण किया हुआ है। मुझे तो यहाँ कोई कछुआ भी नज़र नहीं आया।" सब साथियों ने भी राजा की हाँ में हाँ मिलाई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि कुएँ का मेंढक कभी कुएँ से बाहर कभी गया ही नहीं था। इसलिए वह अज्ञानी था। उसे बाहरी दुनिया की जानकारी बिल्कुल न थी।

मेंढक के ऐसे तेवर देखकर नन्हे कछुए के होश हिरन हो गए। कुछ सँभलकर वह बोला, "महाराज, दुनिया इस कुएँ तक ही सीमित नहीं है।" जब कछुए ने यह बात कही तो राजा और सभी जीव क्रोधित हो गए। नन्हा कछुआ घबराकर झट से कुएँ की तली में जाकर छिप गया क्योंकि वह बहुत डर गया था। सब उसे ढूँढ़ते रह गए।

कुछ दिन बाद एक गड़रिया अपनी भेड़ें चराता उस कुएँ की ओर आ निकला। वह बहुत प्यासा था। कुआँ देखकर उसने अपना डोल रस्सी से बाँधा और नीचे पानी में डाल दिया। राजा बने मेंढक ने सोचा कि फिर ऊपर से कुछ गिरा है। वह जैसे ही डोल की तरफ़ झपटा कि तभी गड़रिए ने रस्सी ऊपर खींच ली। इस प्रकार डोल के साथ मेंढक भी ऊपर कुएँ से बाहर आ गया। कुएँ से बाहर आकर मेंढक हैरान रह गया और सोचने लगा - यह दुनिया इतनी बड़ी है! उसी समय एक संत अपने शिष्यों के साथ वहाँ से गुज़र रहे थे। जब उन्होंने मेंढक के द्वारा कहे गए ये शब्द सुने तो वे बोले - तुम कूप-मंडूक ही रह गए।

इस प्रकार बच्चो! ज्ञान की कोई सीमा नहीं। जब तक हम ज्ञान का विस्तार नहीं करेंगे, तब तक हम, हमारा ज्ञान कुएँ के मेंढक के समान ही सीमित ही रह जाएगा।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - सुमन शर्मा, रोमा रानी
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-14 'कूप-मंडूक') लेखक- स्वामीनाथ पांडेय

बच्चो! यह पाठ यहाँ समाप्त हुआ। इस कहानी से आपने शिक्षा ग्रहण की होगी कि हमें अपने ज्ञान को बढ़ाना होगा। इससे हम उन्नति की ऊँचाइयों को छू सकते हैं।

बच्चो! अब मैं आपको गृहकार्य करने को दे रही हूँ। सब बच्चे इस कार्य को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य:- सब बच्चे अपनी पुस्तक के अतिरिक्त कहानी की पुस्तक पढ़ने की आदत डालें। इससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। पृष्ठ-106 पर दिए शब्दार्थ को तथा पृष्ठ-107 पर दिए पाठबोध के प्रश्न-1 को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखने का प्रयास करेंगे।

आपके विचार से प्रश्न-1,2 को आप स्वयं करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner